<u>बाड़मेर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित ऐतिहासिक, धार्मिक दर्शनीय पर्यटक स्थल</u>

1. **<u>किराडू</u>** :– बाड़मेर से 35 कि.मी. मुनाबाब मार्ग पर हाथमा गांव के पास किराडू एक ऐतिहासिक स्थल है। यहां 1161 ई. काल का शिलालेख भग्नावेश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं सोमेश्वर भगवान के पाँच मन्दिर विद्यमान है। मन्दिरों के निर्माण में रामायण, महाभारत एवं अन्य पोराणिक कथाओं, देवी–देवताओं एवं जनजीवन का चित्रण पत्थरों पर बारीकी से उत्कीर्ण किया गया है। मन्दिर परिसर के आस–पास बिखरे पाषाण यहां प्राचीन नगर बसा होना प्रमाणित करते है। किराडू का प्राचीन नाम ''किराटकूप'' बताया जाता है। किराडू भारत–पाक अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की तरफ होने से विदेशी पर्यटको को वहां पहुँचने हेतु जिला प्रशासन से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

2. **<u>जूना बाड़मेर</u>** :– बाड़मेर से 40कि.मी. मुनाबाब मार्ग पर प्राचीन शहर के अवशेष, 12 एवं 13वीं शताब्दी के शिलालेख, जैन मन्दिरों के स्तम्भ देखने को मिलते है। पहाड़ी पर प्राचीन किला, जिसकी परिधि 15 किलोमीटर के क्षेत्रफल में प्रतीत होती है। यहां से उखड़े लोगो ने बाड़मेर नगर के निर्माण का कार्य किया है।

3. **<u>खेड़</u>** :– जोधपुर–बाड़मेर मार्ग पर लूणी नदी के किनारे भगवान रणछोड़राय का विशाल परकोटे से घिरा अति प्राचीन मन्दिर एवं मूर्ति दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त शेष शैय्या भगवान विष्णु, पंचमुखा महादेव, खोड़ीया हनुमान जी, महिषासुर मर्दिनी के मन्दिर दर्शनीय है। यहां भादवा कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि एवं कार्तिक पूर्णिमा को लगने वाले दर्शन मेले में हजारों दर्शनार्थी पहुॅचते है। यहां यात्रियों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है।

4. **<u>तिलवाड़ा</u>** :– जोधपुर–बाड़मेर मार्ग पर लूणी नदी के किनारे बसा ग्राम तिलवाड़ा लोक देवता मल्लीनाथ का स्थल है। बालोतरा से दस किलोमीटर दूर लूणी नदी की तलहटी में राव मल्लीनाथ की समाधि स्थल पर मल्लीनाथ मन्दिर निर्मित है। यहां चेत्र कृष्णा से चैत्र शुक्ला सप्तमी तक 15 दिन का विशाल मल्लीनाथ तिलवाड़ा पशु मेला भरता है, जहां देश के विभिन्न प्रान्तो, शहरो से आये पशुओं का क्रय–विक्रय होता है। मेले में ग्रामीण परिवेश, सभ्यता एवं सस्कृति का दर्शन करने देशी – विदेशी पर्यटक भी पहुॅचते है। मेले के दौरान हजारो की संख्या में श्रृद्धालु मल्लीनाथ की समाधि पर नतमस्तक होते है।

5. **<u>जसोल</u>** :– बाड़मेर जिले के बालोतरा व नाकोड़ा (मेवानगर) के मध्य मालाणी शासको का निवास प्राचीन नगर जसोल, जिसमें 12 एवं 16वीं शताब्दी के जैन मन्दिर एवं माताजी का मन्दिर दर्शनीय है।

6. **<u>कनाना</u>** :– बालोतरा से 20 कि.मी. व ग्राम पारलू से 8 कि.मी. की दूरी पर ग्राम कनाना वीर दुर्गादास की कर्मस्थली है। यहां पर शीतलामाता अष्टमी पर आयोजित होने वाला पारम्परिक गैर नृत्य व मेला विश्व प्रसिद्ध है। कनाना में निर्मित रावला एवं छत्रिया पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

7. **<u>सिवाना</u>** :– बालोतरा से 35 कि.मी., मोकलसर रेल्वे स्टेशन से 12 कि.मी. दूर प्राचीन नगर सिवाना में ऐतिहासिक दुर्ग शहर के मध्य काफी ऊॅचाई पर स्थित है। वर्तमान में दुर्ग की चार दीवारी, दो–तीन झरोखे, व प्रोल ही विद्यमान है। किले के मध्य पानी का बड़ा तालाब है। अलाउदीन खिलजी, राव मल्लीनाथ, राव तेजपाल, राव मालदेव, अकबर, उदयसिंह आदि इतिहास प्रसिद्ध पुरूषों का सम्बन्ध भी इस किले से रहा है। सिवाना के पास ही हिंगुलाज देवी मन्दिर, हल्देश्वर, मोकलसर पग बावड़ी, मोकलसर जैन मन्दिर, दन्ताला पीर, साईं की बगेची धार्मिक आस्था के रमणीय पर्यटन स्थल है।

8. **कपालेश्वर महादेव मन्दिर** :– बाड़मेर से 55 कि.मी. दूर चौहटन कस्बे की विशाल पहाड़ियों के मध्य 13वीं शताब्दी का कपालेश्वर महादेव मन्दिर शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं पहाड़ियों में प्राचीन दुर्ग के अवशेष मौजूद हैं जिसे हापाकोट कहते हैं। किदवन्तियों के अनुसार पाण्डुवों ने अज्ञातवास का समय यही छिप कर बिताया था।

9. **विरात्रा माता का मन्दिर** :– बाड़मेर से लगभग 48 कि.मी. व चौहटन से 10 कि.मी. उत्तर दिशा में सुरम्य पहाड़ियो की घाटी में विरात्रा माता का मन्दिर है, जहां माघ माह व भादवा की शुक्ल पक्ष चौदस को दर्शन मेले लगते हैं। मन्दिर के अलावा विभिन्न समाधि स्थल, जलकुण्ड व यात्रियों के विश्राम स्थल भी बने हुए हैं।

10. **कोटड़ा का किला** :– बाड़मेर से 65 किलोमीटर दूर बाड़मेर–जैसलमेर मार्ग पर शिव कस्बे से 12 किलोमीटर रेगिस्तानी आंचल में बसे गांव कोटड़ा में छोटी पहाड़ी पर किला बना हुआ है। किले में पुरातत्व महत्व की सुन्दर कलाकृति युक्त मेड़ी व सरगला नामक कुंआ दर्शनीय है। कोटड़ा कभी जैन सम्प्रदाय का विशाल नगर था।

11. **देवकासूर्य मन्दिर** :– बाड़मेर–जैसलमेर मार्ग पर स्थित गांव देवका से 1 कि.मी. पहले दाहिनी तरफ पुरातत्व महत्व के ऐतिहासिक मन्दिर प्राचीनतम प्रस्तरकला से परिपूर्ण है, जो भग्नावस्था में है, जिनका जीर्णोद्धार पुरातत्व विभाग द्वारा किया जा रहा है। दर्शनीय स्मारक है।

    बाड़मेर–जैसलमेर मार्ग पर शिव में गरीबनाथ मन्दिर, ग्राम फतेहगढ़ में व ग्राम देवीकोट में छोटे किलेनुमा कोट प्राचीन भवन निर्माण कला के दर्शनीय है।

12. **बाटाडू का कुंआ** :– बाड़मेर जिले की बायतु पंचायत समिति के ग्राम बाटाडू में आधुनिक पाषाण संगमरमर से निर्मित कुंआ जिन पर की गई धार्मिक युग की शिल्पकला दर्शनीय है। उक्त स्थानों के अतिरिक्त आसोतरा में ब्रह्मा मन्दिर, ग्रामनगर में 12वीं शताब्दी का महावीर मन्दिर, धोरीमन्ना में आलमजी का मन्दिर, पचपदरा नागणेची माताजी का मन्दिर भी दर्शनीय है।